प्रातः क्लास 12/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे–मीठे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। अभी तुम बच्चों के लिए बाप कहते हैं तुम कितने ऊँच थे। उत्थान और पतन का खेल है ना। तुम्हारी बुद्धि में अभी है हम कितने उत्तम और पवित्र थे। अभी कितने नीच अपवित्र बने हैं। तुम पढ़ते हो तो बाप तुमको ही समझाते हैं तुम कितने ऊँच थे अभी कितने नीच बने हो। देवी–देवताओं के आगे जाकर तुम्ही कहते थे आप ऊँच हम नीच हैं। पहले यह पता नहीं था कि हम ही ऊँच ते ऊँच बने हैं। अभी बाप तुम बच्चों को बताते हैं। मीठे2 बच्चे तुम कितने ऊँच, पवित्र थे। फिर कितने अपवित्र बने हो। अपवित्र को नीच, पवित्र को ऊँच कहा जाता है। उनको कहा जाता है निर्विकारी दुनिया। तुम्हारा राज्य था सो फिर अब स्थापन हो रही है। बाप सिर्फ इषारा देते हैं कि तुम कैसे पावन बनेंगे; क्योंकि पतित पावन बाप ही हैं। वह अब सम्मुख बैठे हैं। बाप ने स्मृति दी है तुम बहुत उत्तम षिवालय सतयुग के निवासी थे। फिर 84 जन्म लेते2 आधा में तुम विकार में गिरे तो विशस बनने लगे। आधा कल्प विशस रहे। अभी फिर तुमको वायसलेस सतोप्रधान बनना है। दो अक्षर याद करना है। अभी यह है तमोप्रधान दुनिया। सतोप्रधान दुनिया की निषानी यह (ल0ना0) हैं। 5000 वर्ष की बात है। सतोप्रधान भारत में राज्य था। भारत बहुत उत्तम था। अभी पतित है। निर्विकारी से विकारी बनने में तुमको 84 जन्म लगे हैं। भल वह भी थोड़ी–2 कला कमती होती जाती है; परन्तु कहेंगे तो सम्पूर्ण निर्विकारी ना। एकदम सम्पूर्ण निर्विकारी Jीकृष्ण को कहेंगे। वह गोरा, सुन्दर था। अभी तो पतित बन गया है। देवताएँ ही असुर बने हैं फिर असुर से देवता बनन(ी) है। निर्विकारी थे तो तुमको देवता कहा जाता था। विकारी बने हो तो तुमको देवता नहीं कहेंगे। यहाँ बैठे हो बुद्धि में रहना चाहिए हम शिवालय के, विश्व के मालिक थे। दूसरा कोई धर्म था नहीं। सिर्फ हमारा ही राज्य था। फिर दो कला कम हुई। जरा2 कला कम होती गई। त्रेता में दो कला कम हो जाती है। पीछे विकारी बनते हैं तो और गिरते–2 छी छी बन जाते हैं। इनको कहा जाता है विकारी दुनिया। विषय वैतारणी नदी दिखलाते हैं ना। गोता खाते रहते हैं। वहाँ तो क्षीर सागर में रहते थे। तुम सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी को, अपने 84 जन्मों की कहानी को भी समझ गये हो। हम निर्विकारी थे। इन्हों के राज्य में थे। पवित्र राजाई थी। इसको कहेंगे फुल स्वर्ग। वह सेमी स्वर्ग। यह बुद्धि में तो है ना। बाप आकर सृष्टि के आदि–मध्य–अन्त का राज़ समझाते हैं। बीच में ही रावण आ जाता है। फिर अन्त में इस विकारी दुनिया का विनाश होगा फिर आदि में जाने लिए पवित्र बनना है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। वही पतित पावन है। राय देते हैं मीठे बच्चे अपन को आत्मा समझ मामेकम् याद करो। अपन को देह न समझो। तुमने भक्तिमार्ग में प्रतिज्ञा किया था बाबा आप आवेंगे तो हम आपका ही बनेंगे। आत्मा बाप से बात करती है। कृष्ण कोई बाप थोड़े ही था। आत्माओं का बाप निराकार शिवबाबा एक है। उस हद के बाप से हद का वरसा, इस बेहद के बाप से बेहद का वरसा मिलता है। इसलिए सतयुग को कहा जाता है शिवालय। इन्हों का राज्य किसने स्थापन किया? शिवबाबा ने। सारा भारत शिवालय था। शिवबाबा आकर देवी–देवता धर्म की स्थापना की। यह तो सदैव याद रहना चाहिए। खुशी की बात है ना। अब फिर हम शिवालय में जाते हैं। कोई मरता है तो कहते हैं स्वर्ग में गया। ऐसे कोई जाता नहीं है। यह भी भक्तिमार्ग के गपोड़े हैं दिल को खुश करने लिए। सच–2 हेविन में तो अभी तुम जाने वाले हो। वहाँ कोई रोग बीमारी आदि होती नहीं। तुम सदैव हर्षित रहते हो। तो बाप कितना सहज करके, जैसे छोटे2 बच्चों को बैठ समझाते हैं। भल बाहर में कहाँ रहते भी तुम पद पा सकते हो। इसमें पवित्रता तो पहले मुख्य है। खान–पान शुद्ध। देवताओं के आगे कब सिगरेट, बीड़ी आदि का भोग लगाते हैं? ग्रन्थ के आगे कब अण्डे वा सिगरेट आदि भोग रखा है? ग्रन्थ को समझते हैं यह है जैसा गुरु गोविन्द का शरीर। ग्रन्थ को इतना मान देते हैं। यह गुरु की जैसे देह है। ऐसे सिक्ख लोग समझाते हैं; परन्तु नानक ने थोड़े ही बैठ यह ग्रन्थ लिखा है। नानक ने तो अवतार लिया। सिक्ख लोगों की वृद्धि हुई है बाद में यह ग्रन्थ आदि बने हैं। एक के

बाद फिर सिक्ख धर्म आते हैं। पहले तो ग्रन्थ भी इतना छोटा हाथ का लिखा हुआ था। अभी गीता के लिए समझते हैं यह कृष्ण का रूप है। ऐसे मानो। जैसे नानक का ग्रन्थ वैसे कृष्ण की गीता गाई हुई समझते हैं। उनको ही कृष्ण समझते हैं। गीता है ही, कृष्ण भी है ही। कृष्णभगवानुवाच ही कहते रहते हैं। बाप बैठ समझाते हैं इनको कहा जाता है अज्ञान। भक्तिमार्ग में जो कुछ सुनते हैं, शास्त्र पढ़ते हैं यह सभी है भक्तिमार्ग की सामग्री। ज्ञान तो एक परमपिता परमात्मा में ही है। ज्ञान से ही सदगति होती है। वह ज्ञान तो बाप के पास ही है। ज्ञान से दिन अर्थात् स्वर्ग की स्थापना हो जाती है। वह है भक्ति जिससे दिन हो जाती है। वह है भक्ति जिससे रात होती है। अभी बाप कहते हैं आत्मा को प्यूर बनाना है इसके लिए मेहनत करनी पड़े। माया के तूफान ऐसे जबरदस्त आते हैं जो ज्ञान एकदम उड़ जाता है। किसको बोल भी न सके। पहला काम विकार ही बहुत तंग करता है। इसमें ही टाइम लगता है। है तो एक सेकण्ड में जीवनमुक्ति की बात। बच्चा पैदा हुआ और मालिक बना। तुमने पहचाना शिवबाबा आया है और वरसे के हकदार बने। गीता भी शिवबाबा ने ही गाई थी। उसने ही कहा है मामेकम् याद करो। मैं इस साधारण तन में आता हूँ। कृष्ण कोई साधारण थोड़े ही है। वह तो जन्म लेता है तो जैसे बिजली चमक जाती है। बहुत प्रभाव पड़ता है। इसलिए श्रीकृष्ण का अभी तक गायन करते रहते हैं। बाकी शास्त्र आदि सभी हैं भक्ति की। अंग्रेजी में फिलॉस्फी कह देते हैं। स्प्रीचुअल नालेज तो स्प्रीचुअल फादर ही दे सकते हैं ना। खुद कहते हैं मैं तुम्हारा स्प्रीचुअल फादर हूँ। तुम बच्चे जानते हो बाप ही ज्ञान का सागर है। तुम बच्चे भी बाप से सीख रहे हो। ज्ञान को धारण कर रहे हो। फिर पिछाड़ी में बाप मिसल बन जावेंगे। सारा मदार धारणा पर है। फिर वह ताकत आ जावेगी बाप की याद से। याद का जौहर कहा जाता है। तलवारों में भी फर्क तो होता है ना। वही तलवार 10/5 रुपये वाले भी होते हैं। वही तलवार 3/4 हज़ार के भी होते हैं। बाबा तो अनुभवी है ना। तलवार का बहुत मान होता है। गुरु गोविन्द सिंह के तलवार का कितना मान है। तो तुम बच्चों में भी योग का बल चाहिए। तो ज्ञान तलवार में जौहर आवेगा। फिर जल्दी समझेंगे। ड्रामा प्लैन अनुसार तुम मेहनत तो करते रहते हो। जितना2 बाप को याद करेंगे याद से ही पाप कटेंगे। पतित पावन बाप ही यह युक्ति बता रहे हैं। फिर कल्प बाद भी ऐसे ही आकर तुमको ज्ञान देंगे। इनको भी ऐसे ही सभी कुछ सिमटाये अपना रथ बनाने ले आवेंगे। तुम बच्चों को वहाँ कितनी कशिश हुई, कैसे भी .....। बाप में कशिश है ना। अभी तुमको ऐसा सम्पूर्ण बनना है। नम्बरवार ही बनेंगे। यह राजधानी स्थापन होती है। इसमें जितना जो मेहनत करेंगे। सृष्टि चक्र को तो समझ लिया है। सतयुग आदि से कलियुग अन्त तक। अभी है संगमयुग। बाप को भी जरूर आना पड़े पावन बनाने। पावन अर्थात् सतोप्रधान। तुम सतोप्रधान थे फिर सतो, रजो, तमो आये। खाद पड़ती गई। पहले2 चांदी की खाद पड़ी, फिर ताम्बे की फिर लोहे की। अभी वह खाद निकले कैसे? आत्मा सच्ची(प्योर) होती है तो जेवर भी सच्चा अथवा गोरा शरीर होता है। आत्मा झूठी(पतित) बनती है तो शरीर भी पतित होता है। ज्ञान के पहले तो यह भी नमन–वन्दन करते थे। नारायण का बड़ा चित्र चित्र आयल पेन्ट कागदी पर लगा रहता था। उनको ही बहुत प्यार से याद करते थे। कोई और की याद नहीं। बाहर और तरफ ख्याल जाता था तो अपन को चमाट मारते थे मन भागती क्यों हो। दर्शन क्यों नहीं मिलता है। भक्ति में था ना। फिर जब विष्णु का दर्शन मिला तो भी कोई मुक्ति थोड़े ही हो गई। पुरुषार्थ तो जरूर करना होता है ना। एमआबजेक्ट तो सामने खड़ी है। यह चैतन्य थे। जिनका फिर जड़ चित्र बनाया। अभी तुमको मालूम पड़ा है हम पतित थे। बाप पावन बनाने आये हैं। नर से ना0 बनाते हैं। तुम समझते हो हम इन्हों के राजधानी में थे। फिर ऐसा बनने पुरुषार्थ करते हैं। तो अच्छी रीत फालो करना पड़े। ब्रह्मा को देवता थोड़े ही कहा जाता विष्णु देवता ठीक है। मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं। ऐसे ही कह देते गुरु ब्रह्मा गुरु अभी फिर विष्णु गुरु काहे का हुआ। सभी को गुरु कहते रहते हैं। फिर पिछाड़ी में कह देते परमात्मायनमः। उनको गुरु। उनको परमात्मा कह देते। सबसे बड़ा तो बाप है ना। उनसे हम यह सीख रहे हैं। औरों को सिखलाने

– – – – – – – – – – – – – – – – लिये। सद्गुरु जो तुमको समझाते हैं वह फिर तुम औरों को समझाते हो। गुरु को ऐसे नहीं कहेंगे कि यह बाप है। टीचर है। नहीं। तो यह सारी नालेज तुम्हारी बुद्धि में होनी चाहिए। हम शिवालय में थे। अभी वैश्यालय में पड़े हैं। फिर अब स्वर्ग शिवालय में जाना है। बाप के सिवाय तो और कोई ले जा नहीं सकते। भल कहते हैं फलाना ब्रह्म में लीन हो गया। ज्योति ज्योत समाया; परन्तु आत्मा तो अविनाशी है। हर एक में अपना2 पार्ट भरा हुआ है। सभी एक्टर्स हैं। उनको अपना पार्ट बजाना ही है। वह कब मिट नहीं सकता। आत्मा भी अविनाशी है उनका पार्ट भी अविनाशी है। जो भी सारी दुनिया की आत्माएँ हैं उनको पार्ट बजाना ही है। जैसे कि नये सिरे शूटिंग होती जाती है; परन्तु यह अनादि शूटिंग हुई पड़ी है। तो यह वन्डर है ना। यह वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी रिपीट होती है। आत्माएँ सभी पार्टधारी हैं। आत्मा वन्डरफुल है ना। इतनी छोटी चीज़। उनमें 84 का पार्ट बजता ही रहता है। शरीर लेकर पार्ट बजाते ही रहते हैं। कब बन्द नहीं होता। यह वन्डरफुल सितारा है ना। जो भृकुटि के बीच में चमकता रहता है। कब घिसता ही नहीं। उनका न आदि है न अन्त है। सभी आत्माओं का ड्रामा में पार्ट है अनादि। जो भी 500 करोड़ आत्माएँ हैं वह सभी हैं अविनाशी पार्टधारी। पहले2 एक्टर्स हैं महाराजा–महारानी। पवित्र थे वह फिर अपवित्र बनते हैं। यहाँ के अपवित्र राजा रानी वहाँ के पवित्र महाराजा महारानी के चित्र बनाकर उनकी बैठ पूजा करते हैं। यह ज्ञान तुम्हारे में आगे थोड़े ही था। अभी समझते हो। इतनी छोटी आत्मा कैसे 84 जन्म लेती है। कितना अजब सितारा है। वह फिर सितारा इतना पार्ट बजाती है। स्वर्ग है वन्डर आफ दी वर्ल्ड। अथवा स्वर्ग नाम सु(न) दिल खुश होती है। अभी तो सतयुग है नहीं। अभी तो है कलियुग तो जरूर पुनर्जन्म भी कलियुग में ही लेंगे। जाना तो सभी को जरूर है; परन्तु पतित आत्माएँ जा नहीं सकती। अभी तुम बच्चे पावन बनते हो योगबल से। पावन दुनिया स्वर्ग गॉड फादर ही स्थापन करते हैं। फिर रावण हेल बनाती है। यह तो प्रत्यक्ष है ना। रावण को जलाते हैं। मनुष्य तो कहते यह अनादि चला आता है; परन्तु कब से शुरू हुआ यह किसको भी पता नहीं। आधा2 तो कर न सके; क्योंकि लाखों वर्ष कह देते हैं। कलियुग को फिर 40 हजार वर्ष कह देते हैं। तो मनुष्य घोर अंधियारे में हैं ना। अज्ञान नींद से जगाना बड़ा मुश्किल है। जागते ही नहीं। अभी है संगमयुग। जबकि बाप आकर पावन बनाने की युक्ति बताते हैं। तुम पावन होंगे तो पावन दुनिया स्थापन हो ही जावेगी। यह पतित दुनिया ही खलास हो जावेगी। अभी कितनी बड़ी दुनिया है। सतयुग में तो बहुत छोटी दुनिया हो जावेगी। अभी माया पर जीत पहन पावन जरूर बनना है। बाप कहते हैं माया भी बड़ी दुस्तर है। पावन बनने में ही अनेक प्रकार के विघ्न डालती है। पवित्र बनने हिम्मत रखते हैं फिर माया आकर क्या हाल कर देती है। घूसा लगाकर गिरा देती है। फिर बहुत मेहनत करनी पड़ती है। कोई तो गिरते हैं फिर मुँह भी नहीं दिखाते हैं। फिर इतना ऊँच पद पा न सके। पुरुषार्थ पूरा करना चाहिए। फेल तो न होना चाहिए। इसलिए कोई गन्धर्वी विवाह भी कर दिखाते हैं। सन्यासी तो कहते शादी कर और पवित्र रहे यह असम्भव है। बाप कहते हैं सम्भव है; क्योंकि प्राप्ति बहुत है। यह अन्तिम एक जन्म तुम पवित्र बनेंगे तो तुमको स्वर्ग की बादशाही मिलेगी। क्या इतनी बड़ी प्राप्ति के लिए तुम एक जन्म पवित्र नहीं रहेंगे? कहते हैं बाबा जरूर रहेंगे। सिक्ख लोग भी पवित्रता का कंगन डालते हैं। यहाँ कोई धागा आदि पहनाने की दरकार नहीं। यह तो बुद्धि की बात है। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। बच्चियाँ बहुतों को समझाती हैं; परन्तु बड़े आदमियों की बुद्धि में बैठता थोड़े है। तुम उद्घाटन कराते हो थोड़ा नाम निकालने लिए। बाकी वह कोई समझते थोड़े ही हैं। बाप कहते हैं पहले उनको अच्छी रीत समझाओ। यह सभी प्रजापिता ब्रह्मा के औलाद हैं। शिवबाबा से वर्सा मिल रहा है पतित से पावन बनना है अब बाप कहते हैं मामेकम याद करो। ऐसा तो कोई कह न सके। पत्थर बुद्धि है ना। पहले तो उनको बुद्धि में बिठाना है। भारत वायसलेस था। अभी विषस है। फिर वायसलेस कैसे बनेगा। भगवानुवाच मामेकम् याद करो। बस इतना कहे तो भी अहो सौभाग्य; परन्तु इतना भी कह न सकेंगे। भूल जावेंगे। बाबा ने

समझाया था उद्घाटन तो बाप ने कर दिया है। बाकी तुम मेहनत करते रहते हो। फाउंडेशन लगा दिया है बाकी अभी सर्विस स्टेशन का उद्घाटन होता रहता है। यह तो गीता की ही बात है। गीता में भी है बच्चों तुम काम पर जीत पहनो तो ऐसे जगतजीत बनेंगे 21 जन्मों के लिए। भल खुद न बने। औरों को तो समझावें। ऐसे भी बहुत हैं औरों को उठाकर खुद गिर पड़ते हैं। काम महाशत्रु है ना। एकदम गटर में गिरा देती है। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का आज गुरुवार के दिन यादप्यार दिल व जान सिक व प्रेम से स्वीकार करना जी। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

प्वाइंट्स :– वह है यादव कुल। वह कौरव कांग्रेस। तुम हो पाण्डव। लड़ाई की बात नहीं। तुम हो गुप्त। अहिंसक वह है डबल हिंसक। एक दो को मारते भी हैं। विकार में भी जाते हैं। यहाँ वह बात नहीं। बाप कहते हैं पवित्र बनो। विकार में कब न जाना। देवताएँ वाममार्ग में जाते हैं तो वह फिर अपन को देवता कहला न सके। तो हिन्दू कह देते हैं। अभी हिन्दू तो धर्म नहीं है। हिन्दू तो हिन्दुस्तान से निकला है। अपने धर्म को भूल अधर्मी बन गये हैं। हिन्दू धर्म कहना यह तो अधर्म है ना। एक भारत ही अपने धर्म को भूले हैं। और सभी धर्म कायम हैं। बौद्धी ऐसे कहेंगे क्या हम जपानी, चीनी हैं। यह हिन्दू धर्म कह देते हैं। भारत ही अपने धर्म से गिरा है। अभी तुम बच्चे जानते हो हम सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी फिर वैश्यवंशी, शूद्रवंशी बने हैं। फिर हम ब्राह्मण वंशी ब्रह्मा के औलाद ही फिर देवता बनेंगे। तो तुम स्वदर्शनचक्रधारी हुए ना। स्वदर्शनचक्र तुम्हारा है न कि देवताओं को; परन्तु तुमको देते नहीं हैं; क्योंकि तुम हार खाते हो तो स्वदर्शनचक्र गुम हो जाता है। सतयुग में स्वदर्शनचक्र को जानते ही नहीं; परन्तु तुम चढ़ते उतरते रहते हो। गिरते हैं तो एकदम गटर में जा गिरते हैं। माया भुला देती है। फिर इतना ऊँच पद नहीं पा सकते। अपन को देखना है हम संगदोष में गिरते तो नहीं हैं। कहते हैं बाबा संगदोष लगता है फिर हटते हैं। बैटरी सदैव चालू रहे मुश्किल है। इसलिए बाबा ने आठ घंटा दिया है। इतना पुरुषार्थ करो। बाप को याद कर पावन बनना है। बाप की महिमा अलग, श्रीकृष्ण की महिमा अलग है। तुम ऐसा बनने लिए पुरुषार्थ करते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। ओम।

बाप–दादा कमल हस्त लिखत पत्र की कॉपी :–

बड़ौदा निवासी नूरे रत्न दमयन्ती, जगू आदि2 सभी रूहानी सर्विसएबुल बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का यादप्यार। पत्र पाया। लिखा कि श्रीकृष्ण को यहाँ बहुत ..... हैं। वैष्णव धर्म के हैं। उन्हों को बोलो वैष्णव धर्म सो विष्णु पुरी का धर्म तो स्थापन हो रहा है। सम्पूर्ण निर्विकारी आदि सनातन देवी वैष्णव धर्म की तो अब स्थापना हो रही है। वैष्णव का अर्थ यह नहीं कि बेजीटेरीयन बनना है। वैष्णव धर्म का अर्थ है सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, डबल अहिंसक बनना है। विकार में न जाना है। सूर्यवंशी ल0ना0 वैष्णव धर्म के थे। अभी इस समय तो सभी आसुरी अपवित्र हिंसक राव(ण) धर्म के हैं। भारत 5000 वर्ष पहले सूर्यवंशी वैष्णव धर्म का था। नर–नारी पवित्र रहते थे। अभी तो 84 जन्मों बाद अपवित्र आसुरी तमोप्रधान धर्म के हैं। वैष्णव धर्म को आदि सनातन देवी धर्म गाया जाता है। इस समय सिर्फ वेजीटेरीयन को वैष्णव कहा जाता है। श्रीकृष्ण श्रीराधे पहले नम्बर के वैष्णव पवित्र धर्म के थे। इस समय तो सारी दुनिया भारत खास अपवित्र धर्म के हैं। स्त्री–पुरुष अपवित्र हैं। इसलिए सभी पतित विकारी धर्म वाले बेहद के बाप परमपिता शिव को याद करते हैं कि आकर पतितों को पावन करो। यह अपवित्र कलियुग है। कलियुग में अपवित्र ही होते हैं। एक भी पवित्र आदि सनातन देवी देवता धर्म का नहीं कहलाता। आसुरी अपवित्र दुनिया विनाश होनी है। इसलिए रखड़ी पवित्रता के लिए प्रजापिता ब्रह्मा कुमार–कुमारियाँ बांध रही हैं। इस पर शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा अनेक बार समझाया है और तुम भूल गये हो। पूछते हो कैसे समझावे। वन्डर है!